

पुस्तक समीक्षा समकालीन साहित्यकारों की नज़र में श्रीकान्त व्यास पर समीक्षात्मक दृष्टि

समीक्षक: रंजय कुमार सिंह

प्राचार्य, रामकुँज पब्लिक स्कूल, खेदलपुरा, बिहटा (पटना)

लीक-लीक गाड़ी चले,और चले कपूत।

बेलीक तीन चले- शायर शेर सपूत।।

ये काव्य पंक्तियाँ प्रख्यात साहित्यकार, पत्रकार और कलाकार श्रीकान्त व्यास पर अक्षरशः सटीक बैठती हैं। इनकी लेखनी का तेवर औरों से भिन्न है, ये किसी लीक पर चलने में विश्वास नहीं करते, अपनी राह खुद बनाते हैं। इनके कहने के अंदाज में अनूठापन है और इनकी रचनाओं के भाषा-शिल्प चमत्कारिक है। श्रीकान्त व्यास साहित्य की दुनिया में किसी पहचान का मोहताज नहीं। जीवन के झंझावातों से लड़कर सफलता की सीढ़ियों पर निरंतर आगे रहे हैं। सादा जीवन और उच्च विचारों के आग्रही आभासी दुनिया की चकाचौंध से दूर रहकर साहित्य में अपना खास मुकाम बनाया है। सुबह से शाम तक त्याग, धैर्य एवं संयम के साथ नई-नई रचनाओं का सृजन करते रहना इनकी दिनचर्या है। इनकी काव्य, कहानी, नाटक, व्यंग्य व उपन्यास जैसी महत्वपूर्ण विधा में कई कालजयी पुस्तकें प्रकाशित हुईं। व्यंग्य लेखन में इनकी अभिरुचि सर्वाधिक है। इसलिए व्यंग्य की सार्थकता को जीवंत बना देने की कला इनमें विद्यमान है। अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में फैली धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक कुप्रथा एवं बुराइयों पर तीखा प्रहार करते हुए हुंकार भरने की जो कोशिश की है यह दर्शाता है कि श्रीकान्त व्यास धर्म, समाज और राजनीति के प्रति कितने संवेदनशील हैं।

सन् 2023 में मुक्त फलक प्रकाशन, बनर्जी पथ, दरियापुर गोला, पटना, बिहार द्वारा श्रीकान्त व्यास पर केन्द्रित हिन्दी की एक संस्मरणात्मक पुस्तक 'समकालीन साहित्यकारों की नज़र में श्रीकान्त व्यास' प्रकाशित हुई थी। इसे बलराम प्रसाद सिंह ने सम्पादित किया है। सचमुच श्रीकान्त व्यास का व्यक्तित्व और कृतित्व बेमिसाल है। इनके व्यक्तित्व ही नहीं, बल्कि इनके कृतित्व भी आमजन और विशेषजन दोनों को प्रभावित करते हैं। इनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने अंदाज में प्रकाश डाला है। हिन्दी प्राध्यापक और लेखक डॉ. पंडित विनय कुमार ने अपनी सारगर्भित बातों को इस अंदाज में रखा है- “संत कबीर की तरह अक्खड़ और

फक्कड़, तुलसी की तरह सरल- सहृदय, निराला की तरह भावुक- संवेदनशील, महादेवी की तरह करुणा व आध्यात्मिक ज्ञान से पूर्ण, विवेकानंद की तरह अध्यात्म का अलख जगाने वाले और संस्कृति के पोषक तथा जयशंकर प्रसाद की तरह ऐतिहासिकता और काल्पनिकता का अद्भुत संगम श्रीकान्त व्यास के व्यक्तित्व और कृतित्व में देखने को मिलते हैं। होठों पर हल्की मुस्कान से एक अद्भुत आभा मिलनेवाले मित्रों के मानस- पटल पर बिखेरते हैं।” वरिष्ठ समालोचक डॉ. शिववंश पाण्डेय ने सार बातें कही हैं- “अपने व्यंग्य वाणों से समाज की कुरीतियों पर कटाक्ष करते हुए व्यास जी जब थकने लगते हैं तो कविता के तीखे स्वर से अपनी उपचारात्मक योजना को फलीभूत करने की चेष्टा करते हैं।” वरिष्ठ पत्रकार डॉ. संजय कुमार ने व्यास जी के व्यक्तित्व का अंकन ऐसा किया है- “श्रीकान्त व्यास के व्यक्तित्व में सरलता और शालीनता साफ दृष्टिगोचर होती है। व्यास सर को सादगी जीवन पसंद है मगर दृष्टि बहुत पैनी है। चीजों की सूक्ष्म तरीके से पड़ताल और समीक्षा करते हैं। उनके पूरे व्यक्तित्व और कृतित्व में पारदर्शिता बखूबी देखी जा सकती है। उनकी कथनी और करनी में एकरूपता है।”

वरिष्ठ कवि राम गोविंद यादव ‘जानकीन्दु’ का नजरिया इस प्रकार है- “साहित्यकार श्रीकान्त व्यास को किसी खेमे में बाँधकर नहीं रखा जा सकता है। इनका व्यक्तित्व और कृतित्व खेमायुक्त है। इन्हें न तो वामपंथी खेमे में बाँधकर रखा जा सकता है और न ही दक्षिणपंथी खेमे में। वाम, दक्षिण, दलित- फलित आदि खेमे से मुक्त होकर ये साहित्य सृजन में अनवरत लगे रहते हैं। इनका लेखन और इनके कहने का अंदाज कबीर की भाँति है। हालाँकि इन्हें कबीरपंथी भी नहीं कह सकते हैं। आँखें मूँदकर किसी पंथ या सम्प्रदाय पर चलना इनका स्वभाव नहीं। यथार्थ का चित्रण खूबसूरत अंदाज और शैली में करने में इन्हें महारथ हासिल है।” पत्रकार-लेखक उमेश कुमार संस्मरण में लिखते हैं- “क्रांतिदर्शी विचारक श्रीकान्त व्यास के जीवन से जुड़े कई ऐसे प्रसंग हैं जो हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। यहाँ पर इनसे जुड़ा सिर्फ एक प्रसंग की चर्चा मैं और कर देना चाहता हूँ। श्रीकान्त व्यास के

व्यक्तित्व और कृतित्व ही ऐसा है कि इनके सम्पर्क में आनेवाला व्यक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।”

भारत में लागू लॉकडाउन के एक प्रसंग का जिक्र करते हुए उमेश कुमार ने लिखा है- “‘‘लोगों के घर से निकलने और घूमने- फिरने पर सरकार की ओर से पूर्णतः पाबंदी लगी हुई थी। समाज की हर गतिविधि ठप थी। आमलोगों के जीविकोपार्जन पर आफत आ पड़ी थी। गरीब लोगों को खाने पीने के लाले पड़ गये थे। राजधानी पटना के सारे होटल, रेस्टोरेंट सहित फुटपाथ तक की सारी दुकानें बंद पड़ी थीं। सड़कों पर उदासी- ही- उदासी दिख रही थी। सभी लावारिस पशु और जानवर भूख के मारे बेचैन हो गए थे। भूख से व्याकुल जानवर हमलावर हो चले थे। इस लॉकडाउन में श्रीकान्त व्यास का पशुप्रेम भी देखने को मिला। हम सभी को श्रीकान्त व्यास की तरह संवेदनशील होने की जरूरत है।”

दशकों से मित्र रहे वरिष्ठ रंगकर्मी व नाट्य निर्देशक प्रभात पाण्डेय ने श्रीकान्त व्यास के व्यक्तित्व को बहुत निकट में रहकर कसौटी पर कसते हुए लिखा है-एक बात जिसकी चर्चा करना मैं जरूरी समझता हूँ। बात सन् 1998 की जनवरी माह की है। कालिदास रंगालय में स्व. अनिल कुमार मुखर्जी के जयन्ती समारोह के अवसर पर बिहार आर्ट थियेटर द्वारा आयोजित कई दिनों का नाट्य उत्सव हो रहा था। इसमें श्रीकान्त व्यास का लिखा अंगिका नाटक ‘समाज सुधार’ का मंचन था। इस नाटक का निर्देशन श्रीकान्त व्यास खुद कर रहे थे। पटना रंगमंच के इतिहास में अंगिका नाटक की पहली बार प्रस्तुति ने मुझे कालिदास रंगालय की ओर खींचा। मैं एक दर्शक के रूप में इस नाट्य प्रस्तुति में मौजूद था। मुझे याद है नाटक का शानदार प्रदर्शन हुआ था। इस अंगिका नाटक ‘समाज सुधार’ की कथा- वस्तु बेजोड़ थी। इस नाटक के मंचन के चार साल बाद मालूम हुआ कि अब समाज सुधार नाटक बिहार राज्य के तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के अंगिका स्नातकोत्तर विभाग के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। वर्षों तक यह नाटक वहाँ के स्नातकोत्तर अंगिका विभाग के पाठ्यक्रम में शामिल रहा है।

कथा लेखक और शिक्षाविद् डॉ. सी. रा. प्रसाद ने श्रीकान्त व्यास के व्यक्तित्व का सटीक मूल्यांकन किया है- “जब भी मुझे राजधानी पटना के साहित्यिक मंचों पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो वहाँ श्रीकान्त व्यास जी से मुलाकात अक्सर हो जाया करती है। वहाँ पर हम दोनों के बीच साहित्यिक गतिविधियों पर बातें और वर्तमान साहित्य सृजन पर

चर्चा होती है। उनके पास रहने से ऐसा आभास होता है कि जैसे हम साहित्य की घनी छाया में सुस्ता रहे हैं। उनके रग- रग में, वेश-भूषा में, बोल- चाल में, रहन- सहन में साहित्यिकता टपकती है। उनके कंधे से लटकते बैग में पुस्तकें, पत्रिकाएँ सदा मौजूद रहती हैं।

कवि हेमंत दास हिम ने श्रीकान्त व्यास की हिन्दी पत्रकारिता के जुनून, समर्पण और संघर्ष को दर्शाया है- “साहित्यिक पत्रकारिता से जुड़ाव होने के कारण मेरा श्रीकान्त व्यास जी से फिर बाद में कई कवि-गोष्ठियों और साहित्यिक कार्यक्रमों में मिलना हुआ। एक बार मोबाइल से मुझे सूचित किया कि उन्होंने एक हिन्दी मासिक पत्रिका ‘मुक्त फलक’ का आर. एन. आई. से निबंधन कराया है जिसके सम्पादक वे खुद हैं। उक्त पत्रिका का लोकार्पण समारोह पटना के बुद्ध मार्ग स्थित आई. आई. बी. एम. सभागार में 18 सितम्बर, 2017 को होना निश्चित हुआ है। सबने मंच से मुक्तकंठ से श्रीकान्त व्यास जी की प्रशंसा की और उन्हें पूर्णरूपेण समर्पित साहित्यकार-पत्रकार बताया।

वरिष्ठ पत्रकार राजेश कुमार जो श्रीकान्त व्यास के सम्पादन में प्रकाशित हो रही हिन्दी मासिक पत्रिका ‘मुक्त फलक’ में संवाददाता हैं, ने इनके व्यक्तित्व को परोसा है -“श्रीकान्त व्यास जैसे हरफनमौला साहित्यकार मुझे कम ही देखने को मिला है। साहित्य की कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और व्यंग्य जैसी विधा की सर्जना में इनकी कोई सानी नहीं। हालांकि ये मूलतः साहित्यकार हैं। साहित्य ही इनके लिए ओढ़ना और बिछौना है। पत्रकारिता जहाँ इनका पेशा है वहीं साहित्य में ये बखूबी जीते हैं। ये कबीर की तरह स्पष्टवादी और फक्कड़ स्वभाव के हैं। इन्हें सादगी जीवन जीना पसंद है। किसी के साथ ये जल्द ही घुल-मिल जाते हैं। कम समय में ही ये किसी को अपना बना लेते हैं। ये शालीनता के जीते-जागते मिशाल हैं। ये रंगमंच के भी सधे हुए कलाकार हैं। नाटक को इन्होंने केवल लिखा ही नहीं, बल्कि उसमें अभिनय भी किया है। अपने कई नाटकों के इन्होंने शानदार निर्देशन कर कला समीक्षकों को चौंकाया है।” कुल मिलाकर अगर देखा जाए तो हम कह सकते हैं कि इस संस्मरण पुस्तक में नामचीन साहित्यकार श्रीकान्त व्यास का करीब- करीब सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमारे सामने उपस्थित होता है और पाठकों के जीवन को प्रेरित करता है।

पुस्तक : समकालीन साहित्यकारों की नज़र में श्रीकान्त व्यास

सम्पादन: बलराम प्रसाद सिंह

प्रकाशक: मुक्त फलक प्रकाशन, बनर्जी पथ, दरियापुर
गोला, पटना- 800004, बिहार